B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Management & Leadership
Course – 7 (B)/Unit – 3 (b)
Topic – Source Method (स्रोत पद्धति)(3rd lecture)
Lecture No: 26

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
(Samastipur)

.....Continued from the previous class

स्रोत-विधि की सीमाएँ

स्रोत-विधि की निम्नलिखित सीमाएँ हैं -

1. भारतीय ऐतिहासिक स्रोतों का विशद विवरण उपलब्ध नहीं है।
2. इतिहास की सम्पूर्ण विषय-वस्तु के लिए स्रोत उपलब्ध नहीं कराए जा सकते हैं।
3. यह पद्धति अधिक विस्तृत है। इसमें समय का अधिक व्यय होता है। अतः प्रत्येक ऐतिहासिक प्रकरण के लिए यह विधि व्यवहारिक नहीं है।
4. आर्थिक दृष्टि से भी यह विधि व्यवहारिक नहीं है। स्रोतों को एकत्र करने में काफी धन-राशि खर्च करनी पड़ती है।
5. प्राथमिक व जुनियर स्तर के छात्रों में विश्लेषण क्षमता का विकास नहीं हो पाता है। अतः इस स्तर पर स्रोत-विधि का प्रयोग भली-भाँति नहीं किया जा सकता है।
6. यह विधि अधिक जटिल है एवं इसमें विशेष तकनीकी का प्रयोग होता है। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
7. ऐतिहासिक-स्रोतों को समझना अत्यन्त जटिल कार्य है। इसका विश्लेषण विशेषज्ञों द्वारा ही किया जा सकता है।

8. स्रोतों के पुराने होने के कारण उनके नष्ट होने का खतरा रहता है। अतः इनके प्रदर्शन के समय अनुशासन की आवश्यकता होती है।

9. चल-चित्र, फिल्म-स्ट्रिप तथा अन्य श्रव्य एवं दृश्य शिक्षण सामग्री के प्रयोग से स्रोतों का महत्व कम हो गया है।

सावधानियाँ

स्रोत-विधि का प्रयोग करते समय नम्नलिखित सावधानीयाँ बरतनी चाहिए -

1. शिक्षक को पाठ्य-वस्तु के संदर्भ में स्रोत का प्रयोग करना चाहिए तभी यह विधि प्रभावशाली होगी।

2. स्रोतों के संबंध में पूर्ण जानकारी रखनी चाहिए जिससे छात्रों की शंकाओं का नीवरण किया जा सके।

3. शिक्षक को स्रोत के प्रदर्शन के समय कक्षा मे ऐसा स्थान ग्रहण करना चाहिए जिससे सभी छात्र देख सकें।

(समाप्त)